ISSN : 2583-2948

आशा

डिम्पी गोयल
वाइस प्रेसिडेंट – एच एस बी सी
हैदराबाद

पतंग बिना डोर की
ऐसी थी यह ज़िंदगी,
तू झोंका बन आ गई
यह आसमान को छू गई

सुखी कोई थी नदी
बरसों से जो तप रही
तू बारिशों सी आ गई
प्यास मिटा गई…

हवेली खंडहर सी
खामोशियों से झूझती
तू कोयल बन आ गई
वीराना चहका गई…

चौखट सुनी थी कोई
जो रास्ता तक थक गई
तू मेहमान बन आ गई
इंतज़ार मिटा गई …

ISSN : 2583-2948

ना जिसका कोई था पता
अंधेरी काली सी गुफा
तू जुगनू बन आ गई
रोशनी फैला गई …

टूटी कोई आस सी
अटकी कोई साँस सी
तू आशा सी बंधा गई
जीना सीखा गई …

आवारा बनी थी घूमती
उड़ती कोई धूल सी
तू मक़सद से मिला गई
नयी दिशा दिखा गई …

बेरंग थी करूप सी
कुचली,दबी अछूत
सी तू गले से लगा गई
मसीहा तू बना गई…

anukarsh@alliance.edu.in